# 15 वर्षों के बाद नगर में हो रहा मुनिश्री का चातुर्मास

**प्रभात जैन, डिण्डौरी।** 15 वर्षों के अंतराल के बाद डिण्डौरी नगर में 108 श्री विद्यासागरजी महाराज के परम प्रभावक शिष्य मुनिश्री निर्णयसागरजी महाराज के चातुर्मास का परम सौभाग्य नगर के जैन समाज को प्राप्त हुआ है। डिण्डौरी समाज में बड़ा उत्साह है। मुनिश्री द्वारा प्रतिदिन सुबह रत्नकरण्ड श्रावकाचार्य एवं दोपहर तत्वार्थ सूत्र की कक्षा लग रही है तथा शाम को प्रतिदिन आचार्य भक्ति का कार्यक्रम हो रहा है।

पर्यूषण पर्व पर हुए मनमोहक कार्यक्रम – मुनिश्री के सानिध्य में पर्यूषण पर्व पर 10 दिन तक श्रावक संस्कार शिविर का आयोजन किया गया। इस शिविर में 100 शिविरार्थियों ने भाग लिया आत्मशुद्धि के महापर्व में समाज के लोगों ने धर्म लाभ लिया। अंतिम दिन मुनिश्री के सानिध्य में बहुत ही व्यवस्थित एवं मनमोहक विमान यात्रा का जुलूस नगर में निकाला जिसमें बैण्ड पार्टी एवं उसके पीछे 21 बच्चे केशरिया ध्वज लिये चल रहे थे, बाद में मुनिश्री एवं श्रीजी पालकी एवं पीछे धोती दुपट्टे में सभी शिविरार्थी तथा पीछे पीली साड़ियों में महिलायें चल रही थी। उसी क्रम में सभी युवक एवं बच्चे सफेद कुर्ता पैजामा में तीन तीन की कतार में नारे लगाते हुए व्यवस्थित चल रहे थे। रास्ते में जगह जगह लोग मुनिश्री के पाद प्रक्षालन, श्रीजी की आरती कर रहे थे। ब्रम्हचारी पंकज भैयाजी एवं ब्रम्हचारी राजेन्द्रजी के साथ आयी संगीत पार्टी ने मनमोहक संगीत की धुनों से पूजन संपन्न कराई तथा रात्रि में भैयाजी के द्वारा निर्देशित विभिन्न धार्मिक एवं शिक्षाप्रद नाटक संपन्न कराया गया। अंतिम दिन सांस्कृतिक कार्यक्रमों के प्रतिभागियों का पुरस्कार वितरित किए गए तथा ब्रम्हचारी भैयाजी एवं बाहर से आये हुए कलाकारों का सम्मान किया गया। इन सभी आयोजन में समाज के सिंघई राजीव जैन, डॉ. सुनील जैन, सुरेन्द्रकुमार जैन, आनंदकुमार जैन, सतेन्द्र जैन, इंजी. सुगमचंद जैन, एड. सुगम जैन, प्रभात जैन, मनोज जैन, अरूण जैन आदि समाज बन्धुओं का विशेष सहयोग रहा।

# दशलक्षण पर्व का समापन क्षमावाणी पर्व के साथ संपन्न

**अरविन्द जैन 'बाकल' जबलपुर।** पर्यूषण पर्व की समाप्ति पर श्री दिगम्बर गोलालारीय नवयुवक सभा के तत्वावधान में क्षमावाणी का आयोजन अग्रवाल बारात, घर, उखरी रोड़ पर किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि श्री निर्मल कुमार जैन ज्योतिषाचार्य, अध्यक्ष श्री राजकुमारजी जैन एवं विशिष्ट अतिथि श्री सतेन्द्र जैन 'भाऊ' थे। सर्वप्रथम अतिथियों एवं संस्था के पदाधिकारियों द्वारा भगवान महावीर एवं परम पूज्य 108 आचार्य विद्यासागरजी महाराज के चित्र के समक्ष दीप प्रज्जवलन किया गया। तत्पश्चात मंगलाचरण कुमारी रिया एवं गीतिका मोदी द्वारा किया गया। कार्यक्रम के प्रथम चरण में अतिथियों का स्वागत संस्था अध्यक्ष श्री अरविन्द जैन, उपाध्यक्ष अश्विन जैन, महासचिव डॉ. सुनील जैन एवं कोषाध्यक्ष आलोक जैन तथा सुधीर बालाजी, अरविन्द कटलरी, जयकुमार जैन घुन्सौर, सुरेन्द्र जैन घुन्सौर, मुकेश फणीश एवं सुनील भाऊ द्वारा किया गया। सांस्कृतिक कार्यक्रम में समाज के बाल कलाकारों के द्वारा नृत्य, भजन एवं कविता प्रस्तुत किये गये।

उसके पश्चात समाज के महिला शक्ति द्वारा भजन एवं नृत्य प्रस्तुत किया गया। श्रीमती निहारिका जैन के नृत्य ने सभी का मन मोह लिया। कार्यक्रम पश्चात पोटली ज्ञान एवं हाऊजी का कार्यक्रम हुआ। जिसमें सभी ने बड़े उत्साह से जैन धर्म के प्रश्नों का सही–सही जवाब देकर पुरस्कार प्राप्त किया। सांयकालीन भोजन पश्चात दशलक्षण पर्व में दस उपवास करने वाले अनुभव जैन, आठ उपवास करने वाले सिद्धार्थ सागर एवं मध्यप्रदेश राज्य विद्युत मंडल में कार्यरत सीए अर्पिता जैन तथा बारहवीं में उच्च अंको से उत्तीर्ण यशस्व जैन एवं अंकिता जैन को 'गोलालारीय दर्शन' परिवार की ओर से प्रशस्ति पत्र एवं उपहारों से सम्मानित किया गया। सांस्कृतिक कार्यक्रम में भाग लेने वाले बच्चों को पुरस्कार, स्वर्गीय श्रीमती सुनीता जैन की स्मृति में सुधीर बालाजी द्वारा एवं श्रीमती मालती जैन द्वारा किया गया। अंत में संस्था अध्यक्ष अरविन्द जैन द्वारा अतिथियों को स्मृति चिन्ह देकर सम्मान दिया गया एवं आभार प्रदर्शित किया गया। कार्यक्रम का संचालन अरविन्द जैन भाईजी एवं अर्पिता जैन द्वारा किया गया।

**अभिषेक राजेश जैन 'अभि', पन्ना।** चिंतामणि पार्श्वनाथ भगवान के नाम से सुशोभित पन्ना नगरी में विराजमान परम पूज्य गणधराचार्य उपसर्ग विजेता प्रज्ञाश्रमण अध्यात्मरोगी आचार्य भगवन श्री 108 विरागसागरजी महाराज के परम प्रिय शिष्य परम पूज्य बालयोगी मुनिश्री 108 विनिश्चल सागरजी महाराज के ससंघ सानिध्य में शाश्वत पर्व पर्वराज पर्यूषण अति उत्साह एवं आनंद के साथ संपन्न हुआ। धर्म के दस लक्षण का प्रतीक दशलक्षण पर्व के पूर्व पन्ना शहर के दोनो मंदिरों को सजाया गया। मंदिरो में सुबह से श्रीजी का अभिषेक, शांतिधारा एवं पूजन के पश्चात सुबह 9 बजे से श्रमण श्री 108 विनिश्चलसागरजी के दश धर्मो पर प्रवचन दोप. 3 बजे से तत्वार्थ सूत्र का अर्थ सहित वाचन तथा शाम 6 बजे से गुरुभक्ति, प्रश्नमंच और शंका समाधान के द्वारा श्रमणजी द्वारा समाज के सभी लोगों में धर्म के संस्कारों का बीजारोपण किया गया। श्रमण संघ का सानिध्य पाकर समाज के सभी बच्चे एवं युवा भी नियम लेकर धर्म के मार्ग पर प्रशस्त हुये। मंदिरों में शाम को संगीतमय आरती, ब्रह्मचारी भैयाजी द्वारा शास्त्र प्रवचन एवं अन्य सांस्कृतिक कार्यक्रमों ने पर्यूषण पर्व के उत्साह एवं आनंद में और अधिक वृद्धि की। पर्यूषण पर्व के सानंद समापन पर श्रीजी की भव्य शोभायात्रा निकाली गई जो नगर के प्रमुख मार्गो से होती बड़ा बाजार मंदिरजी पर समाप्त हुई। जिससे नगर में अभूतपूर्व धर्म की प्रभावना हुई।

**अंचल जैन, पृथ्वीपुर।** पर्यूषण पर्व में समाज जनों ने पूर्ण भक्ति भाव के साथ पूजा अर्चना की, संध्या में आरती एवं शास्त्र प्रवचन का आयोजन भी हुआ। इस पावन बेला पर श्रीमती अनंत जैन (लड़वारी) और श्री हृदेश जैन, दीपू जैन (टेहरका) ने दस उपवास किये। पृथ्वीपुर समाज ने श्रीमती अंनत जैन का सम्मान किया।

# चलो पावागिरी जी चलें।।

**विशाल जैन पवा, तालबेहट।** वीर बुन्देलखण्ड के उत्तर प्रदेश की भूमि पर स्थित एक मात्र सिद्ध क्षेत्र जिसकी महिमा अवर्णीय है, ऐसे परम पुनीत स्थान से स्वर्णभद्र, गुणभद्र, वीरभद्र एवं मणिभद्र आदि मुनिराजों ने मोक्ष प्राप्त किया। स्वर्भद्रादि चार मुनियों की निर्वाण स्थली सिद्ध क्षेत्र पावागिरी जी के मूलनायक भगवान पारसनाथ स्वामी का अतिशय एवं चमत्कार अपरम्पार है। यहाँ प्रतिवर्ष अगहन कृष्ण 2 से अगहन कृष्ण 5 तक वार्षिक मेला में भव्यता के साथ चारों मुनियों का निर्वाण महोत्सव मनाया जाता है। तथा प्रत्येक माह की 15 तारीख को मुनि पुंगव श्री 108 सुधासागरजी महाराज के मंगलमय आशीर्वाद से श्री पारसनाथ दरबार का आयोजन किया जाता है जिसमें मध्यप्रदेश, राजस्थान, दिल्ली, गुजरात एवं उत्तरप्रदेश के कोने–कोने से भारी संख्या में श्रद्धालु पहुँचकर पुण्यार्जन करते हैं तथा भगवान पारसनाथ स्वामी के आशीर्वाद से दुःख दर्द निवारण एवं मनोकामना पूर्ण हो जाने पर श्रद्धा भक्ति के साथ पावागिरी जी का गुणगान करते हैं।

प्रतिवर्ष की भाँति इस वर्ष भी 19 से 22 नवम्बर 2013 तक वार्षिक मेला का आयोजन किया जायेगा। यह मेला जैन समाज में युवक युवतियों के विवाह संबंधो के लिए काफी प्रसिद्ध रहा है। विशेषकर गोलालारीय समाज के संबंध यहां प्रमुखता से होते आये है। आधुनिक संसाधनों के कारण विवाह संबंधी जानकारी आसानी से प्राप्त होने के कारण मेले में विवाह संबंधी जानकारी प्राप्त करने में विशेष रुचि नहीं ली जा रही है । अत: हम सभी को मिलकर क्षेत्र की इस परम्परा को पुर्नजीवित करना ही होगा। जिसके लिए अधिक से अधिक संख्या में विभिन्न नगरों के प्रतिनिधि मंडल अपने क्षेत्र से बच्चों के बायोडाटा लेकर पावागिरी जी के मेले में पहुंचे। विशेष रुप से बुंदेलखंड वासियों से हमारा निवेदन है कि भारी संख्या में पावागिरीजी पहुँचकर 'गोलालारीय दर्शन' के माध्यम से क्षेत्र पर वर्षों से चली आ रही प्रथा को बनाए रखने में सहयोग करें। शादी विवाह समाज के उत्थान का अभिन्न अंग है, परन्तु उचित प्रत्याशी को तलाशने में काफी समय लगता है व्यक्तिगत संबंधों के आधार पर तय विवाह संबंधों में अधिक प्रगाढ़ता आती है। अत: 'गोलालारीय दर्शन' के सतत् प्रयासों को फलीभूत करने के लिए अपना अमूल्य सहयोग प्रदान कर समाज के उत्थान के लिए कदम बढ़ाएँ। सिद्धक्षेत्र पावागिरीजी में वार्षिक मेला के अंतर्गत मुख्य कार्यक्रम 21 एवं 22 नवम्बर को संपन्न होगे, अत: सिद्धभूमि की गरिमा को बनाये रखते हुए अधिक से अधिक संख्या में धर्मावलम्बी पावागिरीजी पहुँचकर क्षेत्र के विकास में अपना सहयोग प्रदान करें।

पावागिरीजी का बाहरी परिवेश एवं प्राकृतिक सौंदर्य अद्वितीय है तथा वातावरण पर्यटक स्थल की छटा बिखेरता है, बरसात के समय निकटवर्ती तालाब में पानी आ जाने से इसकी सुंदरता में चार चांद लग जाते हैं। जो भी श्रद्धालु यहाँ एक बार आ जाता है, वह बार–बार आने के लिए उत्सुक रहता है। अत: समस्त महानुभावों से निवेदन है कि इस बार वार्षिक मेला के आयोजन में सपरिवार पहुँचकर कार्यक्रम को सफल बनाएँ।

**हम पेशेवर पत्रकार नहीं है और ना ही हमारे पास पत्रकारिता का कोई अनुभव है। बस एक चाह, एक उद्देश्य है समाज के बच्चों एवं युवा वर्ग की प्रतिभाओं को आप सबके सामने लाने का एक छोटा सा प्रयास भर है। यदि इस प्रयास में हमसे होने वाली समस्त त्रुटियों के लिए हम सदैव आपसे क्षमाप्रार्थी है।**